

१०० रिजिस्ट्रार जे वारी वृत्ता

३३
५५

आभा अरु कथि	
३३०१	
ASHA ARCHIVES	

१ श्री गुरुपादुके भोपादुकां ॥ अथादि ॥ पुष्पभाजनं ॥ आचम्य ॥ सूर्यार्घ्यः ॥ ॐ कलिकरुखकृता
स्तुतुमात्राभिर्मोक्षसकलकुलालिज्ञानसौभाग्यदाता ॥ त्रिदिवतलमेतूनां त्वं जननी
र्धरुताः कुण्डलफलाद्यैस्त्वांकुलार्चनमाभि ॥ ॥ गुरुनमस्कारः ॥ ५ प्रखण्डमण्डलाका
रं व्याप्य जेन चराचरं तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥ गुरुबुद्ध्या गुरुविल्लु गुरुदेवः
महेश्वरः गुरुदेवजगत्सर्वतस्मि श्री गुरुवे नमः ॥ श्री परमेश्वरी गुरुभ्यो २ ॥ परमाचार्य्य गुरुभ्यो
२ ॥ श्री आदिदेव गुरुभ्योपादुकां ॥ ५ पद्मासनाय पादुकां ॥ ऐप कूर्मासनाय पादुकां ॥ ऐप
आत्मासनाय पादुकां ॥ ५ किंकिरी २ विवेको कनायै ५ः प्रत्राय फट् ॥ पादुकां ॥ करतो धनं ३ ॥
लाहेल ॥ ॥ ऐप हूँ फट् वज्रपंजरे स्वाहा ॥ ऐप ऐवरमकुले कुमवलै जों जों हूँ फट् स्वाः
हा ॥ ॥ करतो धनं ॥ ऐप किंकिरी २ विवेको कनायै ५ः प्रत्राय फट् ॥ ऐप नमो भगवते ह

ॐ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥
हे ५ जाँड़ी कुँवर्वसिखे कुँमळ माय पादुकां ॥ हे ५ घोरै अघोरै अघोरा मुखिव बहु रूपा येई
श्री अनामिका ये पादुकां ॥ हे ५ दाँडी नरु नोरिका येई श्री कनिष्ठका ये पादुकां ॥ हे ५ किण्ठि
विचे को कना येई कुः कलतराय पठ पादुकां ॥ कर न्यास ॥ ॥ हे ५ नमो भगवति हृत्कमला
येई श्री उर्ध्वकाय पादुकां ॥ हे ५ ल्यु कुष्ठिका ये कुलदीपा येई श्री पूर्वकाय पादुकां ॥
हे ५ जाँड़ी कुँवर्वरशिखे कुँदक्षिण वक्त्रा ये पादुकां ॥ हे ५ घोरै अघोरै अघोरा मुखिव बहु रूपा
येई श्री उत्तरवक्त्रा ये पादुकां ॥ हे ५ दाँडी नरु नोरिका येई श्री पश्चिमवक्त्रा ये पादुकां ॥ हे ५
किण्ठि विचे को कना येई श्री परापरवक्त्रा ये पादुकां ॥ रतिवक्त्र न्यास ॥ ॥ हे ५ नमो भगव
ति हृत्कमलां श्री हृदया ये पादुकां ॥ हे ५ ल्यु कुष्ठिका ये कुलदीपा येई श्री शिरलेखा
हा ॥ हे ५ जाँड़ी कुँवर्वशिखे कुँश्री शिखा ये पादुकां ॥ हे ५ घोरै अघोरै अघोरा मुखिव बहु रूपा येई

श्री कवचाय हं॥ हे पद्मांक्षी मरु नारिकायै को श्री नेत्रत्रयाय वषट्॥ हे पकिणि शिवे को कः
नायै कः॥ अस्त्राय फट्॥ अस्त्राय फट्॥ ॥ तमे जलपात्र पूजा॥ प जलपात्रास्त्राय पादूकां॥
हे पद्मांक्षी आनन्दशक्ति भैरवानन्दविराधिपतये नमः॥ श्री जलपात्र नद्वारकाय पा
दूकां॥ श्री डांरुदयाय नमः॥ एवमुक्तेन संपुज्य॥ आवा ॥ रुनादि धेनुमुडां दर्शयेत्॥
पञ्चविकाय विष्णु हे कुलदीपाय धीमहे तन्नो कुप्ति प्रचोदयात्॥ तेनमः श्री एत सर्वदया
दि आत्मने प्रीतिने॥ इति जलपात्र पूजा॥ ॥ अर्घपात्र पूजनं॥ हे प अर्घपात्रास्त्राय
पादूकां॥ हे पद्मांक्षी कूपसुररघोररतरतनूश्चरुपचटप्रचटश्चकहश्चमश्चदमश्च
तये श्विघातयश्विघिहं ३ फट् को श्री महाकौमारिका विवेपादूकां॥ हे पद्मांक्षी
नन्दशक्ति भैरवानन्द श्री महाविद्या राजेश्वरी ॥ श्री अर्घपात्र नद्वारकाय पादूकां॥

कां॥ षडंगेण संपूज्ये॥ आवाहनादियोनितुडां दर्शयेत्॥ अर्घपात्रसंबोद्धत्या नकापावला
लातततयावक छपनुजावडा॥ भूतभुईयाप॥ हैनाभि॥ श्रीहृदि॥ श्रीमुखे॥ स्फुटवक्त्रे॥ श्री
शिर॥ लोमविलोमेन॥ इतिभूतभुई॥ हेविलेपनपादुकां॥ जीविरभस्यपादुकां॥ श्रीसर्वज
नमोहनिपादुकां॥ ५स्तौत्रितत्वअक्षतपादुकां॥ ५स्तौनानाद्यत्रअलंकारपुष्पां पादुकां
॥ ५स्तौ॥ आनन्दशक्तिभैरवानन्दविराधिपनयेस्तु॥ आत्मनेपापहृदनायपुष्पां पादु
कां॥ विभुत्रये॥ शिरशिसिं वयेत्॥ कुसौपादुकां॥ ॥ नतोमालीनिपथेत्॥
पञ्चवलिं दद्यात्॥ मपुरात्मायपादुकां॥ ५श्रीजीकुलपुत्रवतुकनाथायेपादुकां॥ वलिं गृ
ह्णेत्याह॥ नरात्मायपादुकां॥ ५प्रोपरत्नदीपधर्मादेवीमहाकालेशत्रपालाय अवतरत्
वतुर्भुजत्रिनेत्रकाद्यवर्द्धितकेशरूपानिमहाकपालाभरनाविद्युत्कीर्तिसमप्रभा

एहेहि भगवन् भैरवरूपेन यथोपयं नानावलिंगं २ मम विष्णो दानो जां कीं दुं फट् स्वा
हा ॥ ॥ शिं हात्मा य पा हु कां ॥ स वा स ना य पा हु कां ॥ पां को मि न्यो पा हु कां ॥ घ्रां जे के वित्त यो मि
नि लां पी ठ जा स त्र जा स रु जा जोग जा ग र्भ जा कु ल जा स दो रु जा जे के वित्त यो मि नी लां जे व
री भू वे री गो व री दि ग्व री ए का भ री व भ री त्रि क्ष री व त्तु स्य श्व न वा स री ना य थो प यं नाना वलिं
ग २ म म मि धिं कु व न्तु हं ३ फट् स्वा हा ॥ ॥ प्रे ता त ना य पा हु कां ॥ प घ्रां ह्ये श्री ति दि वा मु णे श्व
री वलिं ग २ स्वा हा ॥ ॥ मु श्रा त्मा य पा हु कां ॥ ए प ग्मु गां गी ग्गं ह्ये श्री कु ल ग णे श्व रा य त्त व श्व
ना म्वा स हि ता ये वलिं ग २ स्वा हा ॥ ॥ आ वा रु ना दि ॥ द ण ॥ त ज्ज नि २ यो नि ३ वि तु ग ज तु
डा द श ये त् ॥ थ म २ म त्र नं जा प ॥ स्तो त्र ॥ गौ ज्या पु त्रं कु मा रं ग ग ण त न भि तं सै त्र पं यो मि नी श्व ॥ वा नु
णा व ण मु णा दु रि त प ति मु र्ख वि घ्न ह रं ग णे स ॥ पु ष्या च धूप दी पा वि ष म पु वलि नि व र्धि ता शु षि

तांगी॥ वक्रैसंयुज्जकानां विष्टि हरतु सदा भुक्ति मुक्ति प्रदातां॥ ॥ वलि पात ३ त्रिदेव ३ प्र
जनं वलि नं थ व २ म न्न नं ते॥ दां क्षी भुं त्र पालाय वलिं गृह्ण ३ त्वा हा॥ सो पात ल वुं ते॥ च न्द नाः
क्षत पुष्पं पादूकां॥ ॥ लो धनं ह त्वा॥ आ गण दाय॥ त र्प्य न॥ पित पु ता त्या दि॥ ता न्य ला दि
नि॥ वि न्दु न्न श्रे यं पा त्रे न॥ ॥ श्री संवर्त्ता॥ आ वा रु न॥ हे प श्रुं श्र न न्त म ए ल श्री आ दि दे व
पादूकां॥ ॥ हे प श्रुं श्रुं पादूकां॥ न रा त्ना य पादूकां॥ म पू रा त्ना ये पादूकां॥ प नु शा त्ना ये
पादूकां॥ प शी र त्ना दि प श्रुं श्रुं ध र्मा दे वी म हा का य क्ष त्र पालाय पादूकां॥ प श्री क्री कु ल पु त्र
व द्दु क्ता था य पादूकां॥ गौ मी मु नः सो श्री कु ल ग णे श्व रा य पादूकां॥ थ व २ म न्न नं व लि॥ आ वा
रु न त्वा य न॥ त र्ज णी॥ द ह ग ज मु ड द द्र ष्य ते॥ त तो दि ग पू ज नं॥ वं द्यु जुर ता॥ पु न्दु जुर ता॥
दी दा जुर ता॥ दि ग पू जा या य॥ ॥ हं ता त्ना ये न म॥ हे प श्रु या ग म हा क्षे त्रे श्रु शि ता द्र म हा नै र वा
य धु ला णी श क्ति स हि ता ये हे त्दु क क्ष त्र पालाय श्रु रा धि प त ये न म॥ पू र्वे॥ व लि॥ ॥ श्रु मि॥ ह

षास्त्राये नमः॥ हृगास्त्राये नमः॥ ऐ५ वरुनमहाक्षेत्रे हरुमहाक्षेत्रे वायेनादे श्वराशक्तिसहिता
यत्रिपुराक्षेत्रे पालायते जाधिपतये नमः॥ वलिं॥ ॥ यम॥ मयुरास्त्राये नमः॥ महिषास्त्राय न
मः॥ ऐ५ कोलापुरमहाक्षेत्रे वणमहाक्षेत्रे वाये कोनारीशक्तिसहिता ये अग्निवेताले क्षेत्रपाला
यजनाधिपतये नमः॥ वलिं॥ ॥ नैमत्य॥ गरुडास्त्राये नमः॥ नावास्त्राये नमः॥ ऐ५ अरुहा
समहाक्षेत्रे क्रोधमहाक्षेत्रे वायवैश्वविशक्तिसहिता य अग्निजिह्वाक्षेत्रपालाय राक्ष
साधिपतये नमः॥ वलिं॥ ॥ पशुम॥ महिषास्त्राये नमः॥ मकरास्त्राये नमः॥ ऐ५ जयन्तिपूर
महाक्षेत्रे उन्नतमहाक्षेत्रे वाये वाराहिशक्तिसहिता य कोलाक्षक्षेत्रपालाय जलाधिपत
ये नमः॥ वलिं॥ ॥ वायुव्य॥ गतास्त्राये नमः॥ हलिनास्त्राय नमः॥ ऐ५ वलित्रेवमहाक्षेत्रे कप
लीसमहाक्षेत्रे वाये रन्दाय शक्तिसहिता य कालाक्षक्षेत्रपालाय पवनाधिपतये नमः॥

वलिं॥ ॥ उत्तर ॥ वेतास्त्राये नमः॥ मत्तास्त्राय नमः॥ ऐप हका मृके म हा क्षेत्रे भीषण भैरवाय
 वामुणा शक्तिसहिताय एकपाद क्षेत्रपालाय धनाधिपतये नमः॥ वलिं॥ ॥ ईशान॥ नरास्त्रा
 ये नमः॥ वृषास्त्राये नमः॥ ऐप देवीकोटमहा क्षेत्रे शंसार भैरवाय महा लक्ष्मी शक्तिसहिताय भीम
 रूप क्षेत्रपालाय भुवनाधिपतये नमः॥ वलिं॥ ॥ अधः॥ कूर्मास्त्राय नमः॥ ऐप कूर्मपृष्ठमहा ल
 व श्रद्धाधिपतये हातक महा भैरवाय पाताला शक्तिसहिताय नमः॥ वलिं॥ ॥ उर्ध्व॥ हंसास्त्रा
 ये नमः॥ ऐप डामरमहा क्षेत्रे उज्ज्वलाधिपतये ज्वाला मालिनी सहिताये डामरमहा क्षेत्रपालाय
 स्वर्गाधिपतये नमः॥ वलिं॥ ॥ धृतेदिग पूजा॥ कर्मया अनुक्रम न मालसायाय॥
 ततो कलसार्वभौम॥ न्यास॥ जुस क्रमेन कर श्रुं न्यास॥ आधार शक्ते पादूकां॥ श्री रो दार्णवाय पा
 दूकां॥ कदास्त्राये पादूकां॥ प्रदास्त्राये पादूकां॥ ध्यान॥ ऐप श्रुद्धि स्फुटि क संका संत्रि नेत्रं वन्दु मौलि
 भ॥ वरदा भय रुतं वं पुद्रा माला धरं रुं॥ एवं ध्यात्वा महा देवं इष्ट कामार्थ तिष्ठिद॥ ॥ अचोर

नासासनाय पादूकां केशास्त्राय पादूकां कर्णास्त्राय पादूकां २

र वज्रवति शि ॥ ॐ जु स मृत्युं जया य श्रु नृति श्वर म हा नै र वा य श्रु नृ त हा ल क्ष्मी शक्ति सु दिता
य स ॐ जुं पा दू कां ॥ मूल मन्त्रे न त्रि या अलि ॥ षडंगे संपूज्ये ॥ अ म न्नं वलि ॥ ॐ ब्रह्म ने न म ॥ वि श्व
वे न म ॥ ॐ रुद्राय न म ॥ ॐ ईश्वराय न म ॥ सदा शि वाय न म ॥ ॐ जुं स मृत्युं जया य श्रु नृति श्वर गये
न म ॥ ॐ प्रशा य न म ॥ ॐ मार्ग शि रा ये न म ॥ ॐ जत वे न म ॥ ॐ संवत्सराय न म ॥ ॐ कौ रा दित स प ॥ का ४
समुद्रे भ्यो न म ॥ ॐ इन्द्रादि दश लोकपाले भ्यो न म ॥ ॐ आदित्यादि नव ग्रहे भ्यो न म ॥ ॐ अश्वि न्या
दि नक्षत्रे भ्यो न म ॥ ॐ अथि कं भादि योगे भ्यो न म ॥ ॐ मेषादि द्वादश राशि भ्यो न म ॥ ॐ मुहूर्ते
भ्यो न म ॥ ॐ गंगादि सप्त सागरे भ्यो न म ॥ ॐ अष्ट विरञ्जि वे भ्यो न म ॥ ॐ वशिष्ठादि सप्त रिषि
भ्यो न म ॥ ॐ अनन्तादि अष्ट कुल नागे भ्यो न म ॥ शान्ति कलाय न म ॥ विद्या कला ये न म ॥ निर्वृत्ति
कला ये न म ॥ प्रतिष्ठा कला ये न म ॥ त्रि या अलि ॥ ऐ ५ रुत कुल वृक्ष म हा से न सं मोहन स कल

तिर्थमन्त्रदेवताकलातत्वाधिपतयेवमुपविष्मरुद्रात्म आत्मविद्याशिवतत्वायदत्तसत्तश्च
संपूर्णकलसमूर्तेपादुकां॥ त्रिधा३॥ धनंवल्लि॥ अघोरेन॥ आवाह्य॥ धेनुमुद्रा॥ जाप॥ ३०
जुंस्वाहा१०॥ स्तोत्र॥ रत्नोषधित्यादि॥ इतिकलशपूजा॥ ॥ ततो कुम्भपूजनं॥ अघोरास्त्रं
न्यास॥ ऐ५ जौं जौं प्रस्यु २ रुद्रपायनम॥ पघोर २ तरत नुरूप शिरसेत्वाहा॥ पदपवत २
पव २ शिषाये वौषट्॥ पक २ रुद्र २ वम २ कक्ष वा य हुं॥ पदम २ घातय २ नेतत्रयायवषट्॥ पविषा
तये २ विष्णु २ हुं २ फट् २ अस्त्राय फट्॥ इति अघोरास्त्रन्यास॥ ॥ आसन॥ आचारसंकेत्या
दि॥ ४॥ सिंहासनायपादुकां॥ त्रिदेव ३॥ ब्रह्मान्यादि ४॥ अशितौगादि ४॥ पुरुषानन्दश
क्तिभैरवानन्दश्रीमहाविद्याराजे श्वरीरुतेश्रीकुलकुम्भमहारिकाय अलिहूर्तयेपादुकीं॥
त्रिया अलि॥ षडंग॥ वज्र॥ अघोरास्त्रमन्त्रपूजनं॥ त्वत्समन्त्रेनवल्लि॥ अघोरास्त्रेनवल्लि
आवाह्ययोनिमुद्रादशीयेत्॥ जापसतत्वाहा॥ भार १०॥ स्तोत्र॥ रत्नोषधिसकलतिर्थजलेन

पूजांश्च द्रव्यं च वसुतो नितपुष्पमाला यज्ञेषु योगे विषयमुनिभिः प्रसिद्धं वा कुंभमूर्तिश्चिव शक्ति
जुर्तनमामि॥ ॥ वसुतो नितपुष्पमाला यज्ञेषु योगे विषयमुनिभिः प्रसिद्धं वा कुंभमूर्तिश्चिव शक्ति
हतत्मेन वयित्वा पातु जेश्वर कलेन नासन पापात्तु अष्टैवे कलसा नाथं करेन पञ्चधारनी स्वद्वन्द्व
रनामत्र निदेहि कुलरूपिणि॥ अत्र गन्धादि॥ इति कुंभपूजा॥ ॥ ततो महापात्रपूजनं॥ ऐक
लासनापाकां॥ अघोरास्त्रेन पूजनं॥ षडंगे॥ अघोरास्त्रेन वलि॥ आवाह्ययोनिमुद्रादर्शयेत्
इति महापात्रपूजा॥ ॥ ध्वनेलिर्त्रिंशद्विपूजा॥ ऐ ५ अगुह तृष्णीसानन्ददेवपादुकां॥ ५ पर
मगुह श्रीवर्षा नन्ददेवपादुकां॥ ५ परमेष्ठिगुह श्रीमित्रानन्ददेवपादुकां॥ ऐ ५ सतो आनन्द
शक्तिभैरवा नन्दविराधिपतय सत श्रीत्रिभुजिभद्वारिका ये पादुकां॥ ध्वनमत्र न वलि॥
आवाह्ययोनिमुद्रा॥ ॥ ततो गुगुमण्डलपूजनी॥ अं अत्राय फट्॥ करलोधनं॥ ५ अं अ

गुह्याय नमः॥ ५ कृतज्ञत्वायेत्याह॥ ५ ल्वं मध्याये वोषट्॥ ५ म्यं अनामिकाय हुं॥ ५ उं कनिष्ठ
कायेवषट्॥ ५ अं अत्राय फट्॥ इति करं न्यास॥ ॥ ५ हूं हृदयाय नमः॥ ५ क्ष्मं शिरसेत्याह॥ ५ ल्वं
शिखायुवोषट्॥ ५ म्यं कवचाहुं॥ ५ उं नेत्रत्रयावषट्॥ ५ अं अत्राय फट्॥ छोटिकात्रयश्च॥ ५ हं शि
खास्थो नेपादूकां॥ ५ सं शिरस्थो नेपादूकां॥ ५ लं ललाटे स्थो नेपादूकां॥ ५ मं वक्रमणलेपादूकां॥ ५
लं हृदयाय पादूकां॥ ५ वं नाभौ पादूकां॥ ५ रं गुह्याय पादूकां॥ ५ यं जो नौ पादूकां॥ ५ उं पाद्वयोपादू
॥ अं अत्राय सर्वो नेपादूकां॥ इति नवात्मन्यास॥ ॥ आत्मपूजा॥ ५ हं श्रीलकुलितानन्दनाथ
पादूकां॥ ५ स भृगुगितानन्ददेवपादूकां॥ उत्तरे॥ ५ क्षं संवत्तीनन्ददेवपादूकां॥ ५ नैमत्य॥ ५ मं
महाकालनन्ददेवपादूकां॥ लं पिनाकानन्दनाथपादूकां॥ पूर्वे॥ ५ वं षड्गीतानन्दनाथपादू
कां॥ पश्चिम॥ ५ रं भुजंगितानन्दनाथपादूकां॥ आग्नेय॥ ५ यं वीलितानन्दनाथपादूकां॥ वाय
व्य॥ ५ उं अर्धितानन्दनाथपादूकां॥ मध्य॥ ५ हं श्यासतन्यासमहारिकाये पादूकां॥ अथ ते श्यास

महजा ॥ आसनमये ॥ ॥ पद्मात्माय पादुका ॥ नरात्माये पादुका ॥ ध्यान ॥ ऐ ५ पद्मासनं शबल्यः
श्वदशवक्त्रं त्रिलोचनं ॥ खवनश्चमहादीप्तिं सर्वसङ्गासंयुतं ॥ खवर्णमूर्ध्ववक्त्रं दक्षिणेन
लज्जोभितं ॥ उत्तरेपीतवर्णं त्वात्तदूर्ध्वं रक्तं रञ्जितं ॥ रक्तस्य दक्षिणे धूमं श्वेतं तुत्तरमेव च ॥ त
दूर्ध्वं पीतवर्णं श्वपीतं त्वात्तदूर्ध्वं रक्तं रञ्जितं ॥ रक्तं तुत्तरं रमित्वा हतदूर्ध्वं श्वेतं तुत्तमं ॥ अत्तादशभु
जा देवी कवन्ध्याहारभुषितं ॥ खरु फेतकधरं देवीं त्रिभूलैर्मकुतं तथा ॥ स्तब्धं कमण्डलुं श्वेद
मनं खदां प्रमेव च ॥ वाननं सुतं मुक्तं परभुघण्डे सुलोभितं ॥ वक्त्रं श्वैव गदापाणि वरदा
भयदलकं ॥ कायविन्दुधरं देवं एतान् लंकारं मणितं ॥ सवपीतमवेवर्णं मासने सुखं स्थि
ता ॥ खवरूपं नवात्मानं मण्डलं गुरुमण्डलं ॥ ध्यायद्यत्तु प्रपुक्तात्ताक्षिप्रसिध्यंति मानवा ॥
इति नवात्मा ध्यान मध्यविधिस्तथेति ॥ ५ ॥ हस्तं श्रानन्दशक्तिभैरवानन्दवीराधिपतये स त श्री
नवात्मा गुरुमण्डलं नद्वारकाये पादुकां प्रजयामि ॥ मण्डल मध्यस्थानं तत्तै मूलमन्त्रः

॥ हे पतु ओ महा पूजा गुरु मण्डल श्री कुत्रिका यै पादुकां ॥ त्रिकोण मध्य ॥ पतु यम महा पू गुरु मण्डल
श्री शक्रा यै पादुकां ॥ त्रिकोण दक्ष ॥ पतु इ पर मेष्ठि गुरु मण्डल श्री देवा यै पादुकां ॥ त्रिकोण वामे ॥
पतु इ पर म गुरु मण्डल श्री ग्याना यै पादुकां ॥ त्रिकोण ग्रे ॥ पतु अ गुरु मण्डल श्री आता यै पादुकां ॥
परा पर ॥ प श्री शिव तत्त्व गुरु मण्डल परा यै पादुकां ॥ चतुरश्र पूर्वी ॥ प श्री विद्या तत्त्व गुरु मण्डल परा प
र पादुकां ॥ दक्षिणे ॥ प श्री आत्म तत्त्व गुरु मण्डल श्री अपरा यै पादुकां ॥ पश्चिम ॥ प श्री आता कुशुमा
यै पादुकां ॥ उत्तरे ॥ श्री जया यै पादुकां ॥ आग्ने ॥ श्री विजया यै पादुकां ॥ नैऋत्य ॥ श्री अजिता यै पादुकां ॥
वायु ॥ श्री अपरा यै पादुकां ॥ ईशान ॥ श्री संतानिता यै पादुकां ॥ त्रिकोण मध्य ॥ श्री संतानिता यै पादुकां
॥ पश्चिमे ॥ श्री रं विद्या यै पादुकां ॥ उत्तरे ॥ श्री वं प्रतिया यै पादुकां ॥ दक्षिणे ॥ श्री नं निवृत्ति ति पादुकां ॥
पूर्वी ॥ श्री कुल भैरवा यै पादुकां ॥ वायु ॥ श्री कुल कै पों नाथ भैरवा यै पादुकां ॥ ईशान ॥ श्री कुल से नु
भैरवा य पादुकां ॥ आग्नेये ॥ श्री कुल कपाट भैरवा यै पादुकां ॥ नैऋत्य ॥ श्री कुल आशाने रव पादुकां ॥ वा

त्रिको नदक्षिण रेखा॥ श्रीकुलश्रुता देवी पादुकां॥ वामरेखा॥ भांभीं हूं हः अत्रपालाये पादुकां
 ॥ वायुया॥ गां गी गूं गः गौ श्रीकुलगणेश्वराय पादुकां॥ ईशान॥ श्रीकुलपुत्रवदुकेनाथाये पा
 दूकां॥ आग्नेये॥ श्रीमहाकौमारिकाविदे पादुकां॥ नैऋत्य॥ त्रियां अलि॥ पुरुत श्रीनन्दशक्ति मे
 रवानन्दविराधिपतये सह श्रीनवात्मा गुरुमण्डलभहारिकाये पादुकां॥ पसत आनन्दशक्ति
 मे रवानन्द श्रीमहाविद्याराजे श्वरी श्रीनवात्मा गुरुमण्डलभहारिकाये पादुकां॥ षडङ्गेन संप्र
 त्य॥ ध्वनं बलि॥ ॥ ५ ॥ अघोरैकांथगोरैकांथोरघोरैतरेहफेसर्वतः सर्वसर्वदेजुसः कां नुडनू
 पेका पादुकां॥ ॥ ५ ॥ एवजकुत्रिनीस्यै त्रैलोक्याकर्षणी कां कामागदावनी कीर्त्ती मकारो
 भकारमीरे शो सः श्रीपादुकां॥ ॥ ५ ॥ पुनमो भगवति स्यै कुत्रिकाये जां जां हं घोरै अघोरानु
 त्वां छां किंति रवि चै पादुकां॥ ध्वतं नं बलि॥ ५ ॥ समस्तमन्त्रपीठशिखारसनपीठपीठपीठपीठ
 ठस श्रीपद्मत्रंदोहो प्रसंदोहः दिव्यसिद्धिसमये वक्रपादुकां॥ ५ ॥ उक्तो उक्तो जे किञ्चित्

[illegible]

इति गुंथिन्यासमहारकायबलिं गृह्णन्त्याह॥
 २ पथघोरेऽशिरसेत्वाहा॥ शिरसः॥
 ४ पुं सर्वतः सर्वसर्वे देवं कवचाहं॥ कवच॥
 ६ ५ नमस्ते नृप नृपेजः स्वस्त्राय फट॥ इत्यघोरन्यासः
 ५ त्वं सिद्धायै पादद्वये पादूकां॥ पालि॥ १
 ५ त्वं विद्युत्तारायै उरुद्वयो पादूकां॥ त्वमानेया॥ २
 ५ त्वौ दिप्तौ यै नाभौ पादूकां॥ नाभि॥ ३
 ५ त्वौ शिवायै कण्ठे पादूकां॥ कण्ठे॥ ४
 ५ त्वौ नासान्ध्यायै नासान्धुतद्वयो पादूकां॥ ह्नास॥ ५
 ५ त्वं हरिकेशौ तृक्षारे पादूकां॥ मिहस॥ ६

कुंजुंसः ५

५ कुंजैत्रत्रयाय वसुट॥ नेत्रत्रयाय॥
 इति अघोरन्यासमहारकायबलिं गृह्णन्त्याह॥
 ५ त्वं जघायै जानुद्वयो पादूकां॥ पुलिनेत्वे॥ २
 ५ त्वौ लक्ष्मी गृह्य पादूकां॥ गृह्यस्थान॥ ४
 ५ त्वं मालिन्यै रुद्रे पादूकां॥ रुगलस॥ ६
 ५ त्वं वरुणमुखायै पादूकां॥ प्वालस॥ ८
 ५ त्वौ कटकायै कर्णद्वयो पादूकां॥ तिस्रोत॥ १०
 ५ त्वं मुखेशिरशि पादूकां॥ शिरसे॥ १२
 इति द्वादशाङ्गन्यासः॥
 इति द्वादशाङ्गन्यासः॥

५५५॥ तस्यायै दक्षिण शिरोमाला यो॥ जवेति॥

५३ अमरी तदक्षिणकर्णे ० जवद्वत्तपोतम

५ नृविषाये उत्तर किरो मा लायां ३ व शिर ॥
 ५ लुसा न्ये पाश्चिमा शिरो मा लायां ॥ लिङ्गने ॥
 ५ वं वासुणा ये तृतीये त्रेपा दूकां ॥ मिता दं ते ॥
 ५ धप्रिय दर्शये नेत्र द्वये ॥ मिता ने पा ॥
 ५ नं नाराय न्ये कर्ण द्वये ॥ निष्या ल २ ॥
 ५ उमो रु न्ये दक्षिण कर्ण भूषने ॥ जव हस ता ॥
 ५ उप्ता ये वाम कर्ण भूषने ॥ षव हस ता दा ॥
 ५ ए गुह्ये शक्ति नासां तुट द्वये ॥ हास पो ने पा ॥
 ५ वैवज्रि एव के ॥ त्वा ल स ॥
 ५ कं कण्ठ ये दुष्ट द्वये ॥ धव वा ने गुलि ॥

५ उ अर्धित वाम कर्णे ० एव हस पो त स
 ५ म तित दक्षिणा नासां पुटे ० जव हस ता ष
 ५ म भार भूति स वाम नासां पुटे ० एव हस ता
 ५ लुथा तु दक्षिण गले ० जव आ का ल
 ५ ए रु र वाम गले ० एव आ का ल
 ५ ए जगित स्रुथो दस न पत्तो ० को थु वा
 ५ ए भूति स उर्ध्व दश न पत्तो ० को थु वा
 ५ ओ सद्यो जात स्रुथो द्वे ० को थु मि थु मि
 ५ भौ अनुग्रहित उर्ध्व द्वे ० थं थु स्तु त ति
 ५ अंकु वे स ता लु मध्ये ० थं क स

५ त्रि कालिका ये उर्ध्वो दशन पत्नी ॥
 ५ गति वा ये अधो दशन पत्नी ॥ को धुवी ॥
 ५ पंचोत्तवा ये उर्ध्वो हृ ० थं धुस्म धुशि ॥
 ५ उर्विता ये अधोर्ध्वो हृ ० को धुस्म धुशि ॥
 ५ इमा या देवी जिवा यां ० मेवी ॥
 ५ अंजा गे श्रव्यै वा च यां ० सुधुस ॥
 ५ वशि रिवा हि न्यै कां ० कां स ॥
 ५ भभी षन्यै दक्षिणा वा रुशि षरपा ॥ जब वी
 ५ यं वा युव्या गये वाम वा रुशि षरे ॥ षव वी ह
 ५ इला मा ये दक्षिणा वा रु दगो ॥ जब वी ह

अः महा सेन जिवा यां ० मे वी स ॥
 ५ क को ध दक्षिणा कंधे वी ह स
 ५ तं प्र वण दक्षिणा वा रु दगो ० स पा स
 ५ गं प्र वण दक्षिणा रुतो मणि वंधे ० जब वी स
 ५ यं शिव दक्षिणा रुतो ० वा सा सा पा
 ५ इ एक नु द्व दक्षिणा ले करं गुलि पुत्र पाति
 ५ व कर्म वाम कंधे ० वी ह स
 ५ रु एक नेत्र वाम वा रु दगो ० व व वी ह
 ५ जे वतु मुस्त वाम रुतो मणि वंधे ० स पा स
 ५ अ जे स वाम रुतो ० व व वी स

५८ विनायकै वामबाहु दक्षिणाहु ॥ खववा होके ॥
५९ पृथ्वीनायै करत रहु योपा ॥ जब खवव हुला ॥
६० ममकारि नै दक्षिणाहुस्त करंगुलिपु पायि ॥
६१ अङ्गुली नै वामरुस्त करंगुलिपु ॥ खवपायि ॥
६२ रदिय नै भूल दक्षिणाहुस्त जव वूला ॥
६३ जजयति त्रिभुलानै दक्षिणाहुस्त जव सादात ॥
६४ कापालि नै कपाल वामरुस्त खवलादात ॥
६५ पणव नै रुदि मध्य नुगलेस ॥
६६ अग्नि कायै प्राणाधार ॥ दुकात्य फुको ॥
६७ शतवीर्य नै दक्षिणापार्श्वे ० बाको जे वस ॥
६८ अरुद्राशक्त्यै बापार्श्वे ० खव

५९ असमै वामरुस्त करंगुलिपु ० खवपायि
६० सोमेश्वर दक्षिणापार्श्वे ० जब पाको स
६१ लीगुलि स दक्षिणा नुवाटे ० जब खरस
६२ दंडा नुक दक्षिणा जानौ ० जब पुलि
६३ अङ्गुली नारि स दक्षिणा जंघा पां ० धिधिपासि
६४ उमा कान्त दक्षिणा पादे ० जब पासि
६५ त्रिपाटी स वामपार्श्वे ० खवपाको
६६ दिने वामो नुवाते ० खवतलपा
६७ दवात्रा स वाम जानौ ० खवपुलिस
६८ मीन वाम जंघा पां ० खवधिधिपासि

५ छंदो गल्यै दक्षिणात्तनौ० जवदु
५ लजुत नापै वामदक्षे० खवदुदुत॥
५ आंशु माये पयद्वय० दुदुनेपास॥
५ त्वल्लोदये उदरे० पाथस॥
५ अः संहारि न्येनामि मध्ये० ते फुल॥
५ मं सहा का ल्ये नितम्बे० पेनपास॥
५ माकुल मापु धाये गुह्य० लिंगस॥
५ अंशु का देवो अंशु० वीर्यस॥
५ तंतारा देवो उरु द्वयो० जवतव॥
५ सहा नापै दक्षिणा जानु० जवपुलि॥
५ ऐक्रियापै वाम जानु० खवपुलि॥

५ मेष वाम पादे० खवपासि
५ पलोहित दक्षिणा पाश्वे० वेकास मर
५ फं शिखी सवाम पाश्वे० खववका
५ वं दग तण्ण वृक्षे वंसे० गराधुस
५ मदि रण नाभि मध्ये० ते फुल
५ मम हा का त हृदय० नुग लस
५ यवा ती सत्व वमध्य० सेव ति गा मे
५ रभु जंगा सरक्के० हिरिग मूलस
५ लपी ना की ल मांसे० ला ते फुल ले
५ वं त्वज्ञान न्द मृत्ति मध्य० वल रं धुस

५ ओगायत्यै दक्षिणार्जपायां ॥ जवधिधिपालि ॥
 ५ ओगावित्यै वामजं पायां ॥ त्वधिधिपालि ॥
 ५ ददह्यै दक्षिणपादे ॥ जवपालिस ॥
 ५ फफैकारित्यै वामपादे ॥ त्ववपालिस ॥
 ५ फपीमालनीन्यासमद्वारिकायवलिंगरुद्रासा ॥
 रतिमालनीन्यास ॥

जयक्षद्रं श्रीं ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 रतिसद्वर्तसि न्यास ॥ ॥

ततोषद्वितिन्यासं कारयत् ॥ ऐ ५ कालिश्महाकालिमांसलोहितभोजनीमांसीकोरक्त
 कृष्णमृत्वीदेवीमांसापभ्यक्षशत्रवः श्रीरुद्रद्वितिरुद्रपायपादूकां ॥ लुगलस ॥

५ शं वका नन्दश्रुतिमध्या ० कपातस
 ५ पंचेतानन्दमर्जिनि ० दाकस
 ५ संभृगोसभुक्ते ० बीजलिंगवोस
 ५ रुं लीगुलीराप्राणाधारे ० प्राणा रुद्रय
 ५ सः सन्वत्तपादां गुरुग्रंथिमध्या ॥ गुरुवा
 ५ सः सन्वत्तपादां गुरुग्रंथिमध्या ॥ गुरुवा
 रतिसद्वर्तसि न्यास ॥ ॥

नमो भगतिजुष्टवाणालिनी कृ३। ५॥ कपालखट्टाक्षधारिणी रुन २ दह २ धम २
पव २ मम सत्रु ग्रास २ मार प २ हं ३ फट् श्री शिवो दूति शिरसे ० ॥ तिर मध्य २ ॥ ऐ ५ ह्रस्व ह्रस्वी ह्रस्वा
श्री शिवा दूति शिवा पां ० ॥ तिल तास ३ ॥ ऐ ५ उ त्तो लि आशि मदि आसर्व प्रहरी सवदि आदि
हि आशि उल्लेखि आसर्व दुष्ट भैलायी आ श्री कवच दूतिकवचे ० ॥ कवचे ॥ ऐ ५ र के र के म
हार के वासु ए श्वरी श्वर तार २ त्वा हा नेत्र दूति नत्रे ० ॥ नेत्र स ॥ ५ ऐ गु ह्य ज वि के हं फट् म
म सर्वोपडवा न्य न्म न्म न्म न्म पु योगा दिका न्य न कता का रय ता करिष्य न्ति ता सर्वो नु देन
२ ५ ५। करालि फे की हं फट् गु ह्य कु वि के श्री अत्र दूति अत्रे ० ॥ ता द का त्रे न शिरा ति अ
त्रे ए प्रम नं ॥ रति षट् दूति न्या ल ॥ ॥ प्र म ध्ये ॥ वा गे श्वरी मं रत्न ग ग ए लो क भोग ग भग्ना
मिनी ग ग ए लो क अमृत सवारिणी ग ग नां न न्द देव ग ग ए म्वा वत्त वृष ष्टी लक्ष कोटि सिद्धि
ः वत्त षष्टि लक्ष कोटि योगिनी ० ॥ ह्रीं ॥ ह्रीं ॥ ऐ ५ मायाय पुर त्त त्वर्ग लो क भोग ग भग्ना मि

नीलवर्णलोकप्रसृतसञ्चारिणीत्वर्जनन्ददेवत्वर्जावावतीसलक्षकोटिसिद्धिः वतिसलक्षको
टियोगिनी०॥ नाभि॥ ऐ॥ मोहनीपुरतपवनलोकभोगगर्भगामिनीपवनलोकप्रसृतसञ्चारि
नीपवनानन्ददेवपवनान्याषोडशलक्षकोटिसिद्धिः षोडशलक्षकोटियोगिनी०॥ लिंगे॥ ऐ॥ सा
नायनुरत्नमर्त्यलोकभोगगर्भगामिनीमर्त्यलोकप्रसृतसञ्चारिणीमर्त्यानन्ददेवमर्त्या
प्रसलक्षकोटिसिद्धिः श्रुतलक्षकोटियोगिनी०॥ गुरुदे॥ ऐ॥ द्रोणायत्रीपुरतनागलोकभो
गगर्भगामिनीनागलोकप्रसृतसञ्चारिणीनागानन्ददेवनागान्यावत्यासलक्षकोटिसिद्धि
श्रुत्याशिलक्षकोटियोगिनी०॥ शिरसे॥ ऐ॥ कीर्तुरन्दनीलश्रुनलोकभोगगर्भगामिनीश्रुन
लोकप्रसृतसञ्चारिणीश्रुननाम्बोश्रुनलक्षकोटिसिद्धिः श्रुनलक्षकोटियोगिनी०॥ ॥
इतिरत्नपञ्चकन्यासवर्णनं गृह्यस्थानम् ॥ पुनः नवात्तायासंकारपत्रं ॥ अंगुष्ठान्नायेकदं ॥ ऐ॥ ह्यं
अंगुष्ठान्नायेकदं ॥ ५ अक्षतर्ज्यायत्वाह ॥ ५ लेंमथेमायेवोषट् ॥ ५ यंश्रुनामिकायत् ॥ ५ ऊं केनिष्टको

५
ऐं शिवतत्वाधिकारे हौं परायै शिरसे पादुकां ॥ ॥ श्रीरसा ॥ ॥ ऐं पञ्चात्मतत्वाधिकारे ऐं कीं ह्रूं
कौं ह्रौं फ्रूं परायै हृदयाय पादुकां ॥ ॥ हृदयसा ॥ ॥ ऐं पञ्चद्वारे कीं परमद्वारे ह्रूं धोररु
पेऊः धोरामुखी भौम भीमणी वमरयिवररु २रर २फ्रूं सहौं फ्रूं विद्यातत्वाधिका
रे परायरायै गुह्यस्थाने पादुकां ॥ ॥ गुह्यसा ॥ ॥ त्रिविद्या न्यास भहारकायवर्ति ० ॥ ॥
अथाद्योरिकाष्टक न्यासः ॥ ॥ ऐं पकीं ह्रूं त्र्यद्वारे कीं ह्रौं त्र्यद्वो यारयै शिरसे पादुकां ॥ ॥ श्री
रसा ॥ ॥ ऐं पकीं ह्रूं परमद्वारे ह्रूं सहौं परमद्वो रायै मुखस्थाने पादुकां ॥ ॥ रत्नालसा ॥ ॥ ऐं प
कीं रद्वोररुपे ह्रूं सहौं द्वोररुपायै हृदयाय पादुकां ॥ ॥ वृगोडसा ॥ ॥ ऐं पकीं रद्वोरामु
खि ह्रौं धोरामुखी नाभौ पादुकां ॥ ॥ नाभीसा ॥ ॥ ऐं पकीं ह्रूं फ्रूं ह्रौं भीमायै दक्षिण भुजे
पादुकां ॥ ॥ जवलाहात ॥ ॥ ऐं पकीं ह्रूं फ्रूं ह्रौं भीमरावाम भुजे पादुकां ॥ ॥ रत्नव

लाहती॥ ॥ ऐं पङ्की रं श
पावीड॥ ॥ ऐं पङ्की रं कृ पिव
॥ पादांगुलीषु पादकां ॥ ॥ जवतुती
वामपादांगुलीषु पा० ॥ ॥ ऐं पङ्की रं कृ पिव
रिकाष्टकन्यासभट्टारकायवली० ॥ ॥ अथ त्रिखण्डान्यासभ ॥ अथ मेरुदः
खण्डन्यासः॥ ॥ ऐं पङ्की रं नमो भगवति रुद्रायै के पादांगुष्ठद्वये पाद० ॥ ॥ तृतीयाप
वीडनेखेसं॥ ॥ ऐं पङ्की रं नमश्चायुखण्डायै के पादतलयोपा० ॥ ॥ तृतीतवत्सनेखेसं
॥ ऐं पङ्की रं नमश्चाकासमातृणां के पादद्वये पाद० ॥ ॥ पालीनेखेसं॥ ॥ ऐं पङ्की रं नमः सर्वक
मार्थसाधकानां के गुल्फद्वये पा० ॥ ॥ गुठिचानेखेसं॥ ॥ ऐं पङ्की रं अजरामरणी के नां
जंयाद्वये पा० ॥ त्वानालनेखे॥ ॥ ऐं पङ्की रं सर्वत्रप्रतिहृतगुणिनां के जानुद्वये पा० ॥ ॥ पु
लिनेखेसं॥ ॥ ऐं पङ्की रं स्वर्गपपरिवर्तनीनां के ऊरुद्वये पा० ॥ ॥ काकुलनेखे॥ ॥

ॐ
ऐं ५ सर्व नत्व वशी करणे खाद नो नून लन स मस्त कर्म परिवर्तनी नां फें यो नो पा० ॥ ॥ वसुधा धस
॥ ॥ ऐं ५ सर्व मान गुहा हृदये परम सिद्धि फें नाभिरं धेया ० ॥ ॥ नाभिसा ॥ ॥ ऐं ५ पर कर्म हे
दन करनी संसिद्धिः करे फें गु होया ० ॥ ॥ मार्गसा ॥ ॥ ऐं ५ मातृणां वचनं शुभं फें लिंगे या
० ॥ ॥ लिंगसा ॥ ॥ रुद्र वण्ड न्यास भक्तार काय वलिं ॥ ॥ अथ मातृ खण्ड न्यासः ॥ ॥ ऐं ५ अ
घोरे अमाद्य वर देवि मले धी वहाणी धेया ० ॥ ॥ कण्ठे ॥ ॥ येवं सर्वत्र ॥ ॥ माहे श्वरी था को सा
को भारि रवाल वास ॥ ॥ वैष्णवी क्लाससा ॥ ॥ वाराही डातालने खेस ॥ ॥ इन्द्रोयनि स्नासो नस
॥ ॥ यामुण्डा कुतु वास ॥ ॥ महा लक्ष्मी विन्दुसा ॥ ॥ मातृ खण्ड न्यास भक्तार काय व ० ॥ ॥
अथ मत्र खण्ड न्यासा ॥ ॥ ऐं ५ नमः यामुण्डायै फें वलाटे पादुका ॥ ॥ स्नासो नस ॥ ॥ ऐं ५ ऊर्ध्व के
शी फें केशाग्रे पादुका ॥ ॥ स्नासो नस ॥ ॥ ऐं ५ ज्वलित शिखे फें शिखायां पा ० ॥ ॥ मिखा
गाला ॥ ॥ ऐं ५ विद्युजिह्वे फें ॥ ॥ मीनोस ॥ ॥ ऐं ५ तारका क्षि फें नेत्रयो

यं

पा०॥ ॥ मिखा नैखे ॥ ॥ मध्यपा०॥ ॥ मिहोलस॥ ॥ ऐं थ
विकट्टं स्त्रे प्रे दनाग्रया ॥ ॥ नैखेसं॥ ॥ ऐं प्र कुट्टे २ प्रे अघोद
ओष्ठयोपा०॥ ॥ सुतुसिनेयं॥ ॥ ऐं प्र मांसशो नितसुरासुरप्रिये जिह्वाययि
०॥ मेठस॥ ॥ ऐं प्र हस २ प्रे तालु मध्येपा०॥ ॥ थाकोया घालस॥ ॥ ऐं प्र नृत्य २
प्रे वाकुदयोपा०॥ ॥ लाहोतनेपां॥ ॥ ऐं प्र विजृंभ २ प्रे कण्ठ कथेपा०
॥ ॥ काथु घालस॥ ॥ ऐं प्र मायात्रैलोक्य रूप सहश्रय परिवर्तनीनां प्रे
रुदुथायुपा०॥ ॥ काथु कोस॥ ॥ ऐं प्र नुद २ प्रे हृदि मध्येपा०॥ ॥ तुगोड
याहीस॥ ॥ ऐं प्र नुद २ प्रे नाभिकुण्डेपा०॥ ॥ नेफुगायस॥ ॥ ऐं प्र विरि २ प्रे
नितम्बेपा०॥ ॥ पेनयाचोका॥ ॥ ऐं प्र हिरि २ प्रे कट्टापा०॥ ॥ कलचुकुली

ऐं पभिरिश्रुं लिंगेया० ॥ आकस॥ ॥ ऐं पकिं धिश्चुं गुघेपाटकां ॥ ॥ लिंगद्वारस
॥ ऐं पत्रासनिश्चुं दक्षिणोरुवाटेया० ॥ अवकातसा ॥ ऐं पप्रामनिश्चुं वामोरुवाटेया०
॥ ॥ खवकाजलसा ॥ ऐं पविद्रावनिश्चुं उपस्य द्वयेया० ॥ ॥ बलपानेघेसी ॥ ऐं क्षी
मनिश्चुं दक्षिणजनोपा० ॥ ॥







श्रीगणेशायनमः

श्रीगणेशायनमः श्रीगणेशायनमः॥





























































